मध्य प्रदेश में प्रागैतिहासिक कलाकृतियाँ मिलीं

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **मध्य प्रदेश स्थित** [घुघवा राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान](#) में एक खोज की गई, जहाँ **बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान और टाइगर रिज़र्व** में अनुसंधान कर रहे **सोनीपत स्थित अशोका विश्वविद्यालय के पुरातत्त्ववेदों** के एक दल को जीवाश्म काष्ठ से बनी प्रागैतिहासिक कलाकृतियाँ मिलीं।

मुख्य बिंदु:

- यह खोज दर्शाती है कि [प्रागैतिहासिक चलवासी लोग](#) **पेड़ के लट्ठों** को अपने औजारों और वस्तुओं को बनाने के लिये संसाधन के रूप में उपयोग करते थे।
- **जीवाश्म लकड़ी/काष्ठ से बने औजार भारत में** आम नहीं हैं तथा ये काफी **दुर्लभ** हैं, केवल **तमिलनाडु, राजस्थान और त्रिपुरा** में ही इनके कुछ उदाहरण पाए जाते हैं।
    - हालाँकि घुघवा में खोजी गई कलाकृतियों की आयु अनिश्चित बनी हुई है, लेकिन शोधकर्त्ताओं का अनुमान है कि वे कम-से-कम 10,000 वर्ष पुरानी हैं।
    - इन कलाकृतियों में मध्यम आकार के टुकड़े शामिल थे जिनकी लंबाई लगभग पाँच सेमी. थी।
    - इसके अतिरिक्त, आस-पास के क्षेत्र में लगभग दो सेमी. लंबे कुछ [माइक्रोलिथ](#) भी पाए गए।
- मध्य प्रदेश में कई प्राचीन स्थल हैं जैसे भीमबेटका, जो [संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को)](#) का विश्व धरोहर स्थल है, हथनोरा (जहाँ नर्मदा बेसिन से जीवाश्म हड्डियों के रूप में एक महिला की खोपड़ी का टुकड़ा पाया गया था) इसके अलावा **नीमटोन, पलिकिर** और **महादेव पिपरिया** जैसे स्थल भी हैं।
    - इन क्षेत्रों में मुख्य रूप से **क्वार्टज़ाइट**, **चर्ट और बलुआ पत्थर** जैसी सामग्रियों से बने उपकरण पाए गए हैं।
- हालाँकि, जीवाश्म उद्यान में हाल ही में हुई खोज से पता चलता है कि **हमारे पूर्वज भी जीवाश्म लकड़ी का उपयोग करते थे,** जो यह दर्शाता है कि वे **केवल पत्थर के संसाधनों पर निर्भर नहीं** थे।

घुघवा राष्ट्रीय जीवाश्म

- यह **डिंडोरी** से 70 किलोमीटर दूर **घुगवा गाँव में स्थित** है।
- यह 75 एकड़ भूमि के क्षेत्र में बसा हुआ है, जहाँ पत्तियों और पेड़ों के रोचक एवं दुर्लभ जीवाश्म की खोज जारी है।
- स राष्ट्रीय उद्यान में **पादप जीवाश्म रूप में** हैं जो भारत में **लगभग 40 मिलियन से 150 मिलियन वर्ष पूर्व** मौजूद थे।

बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व

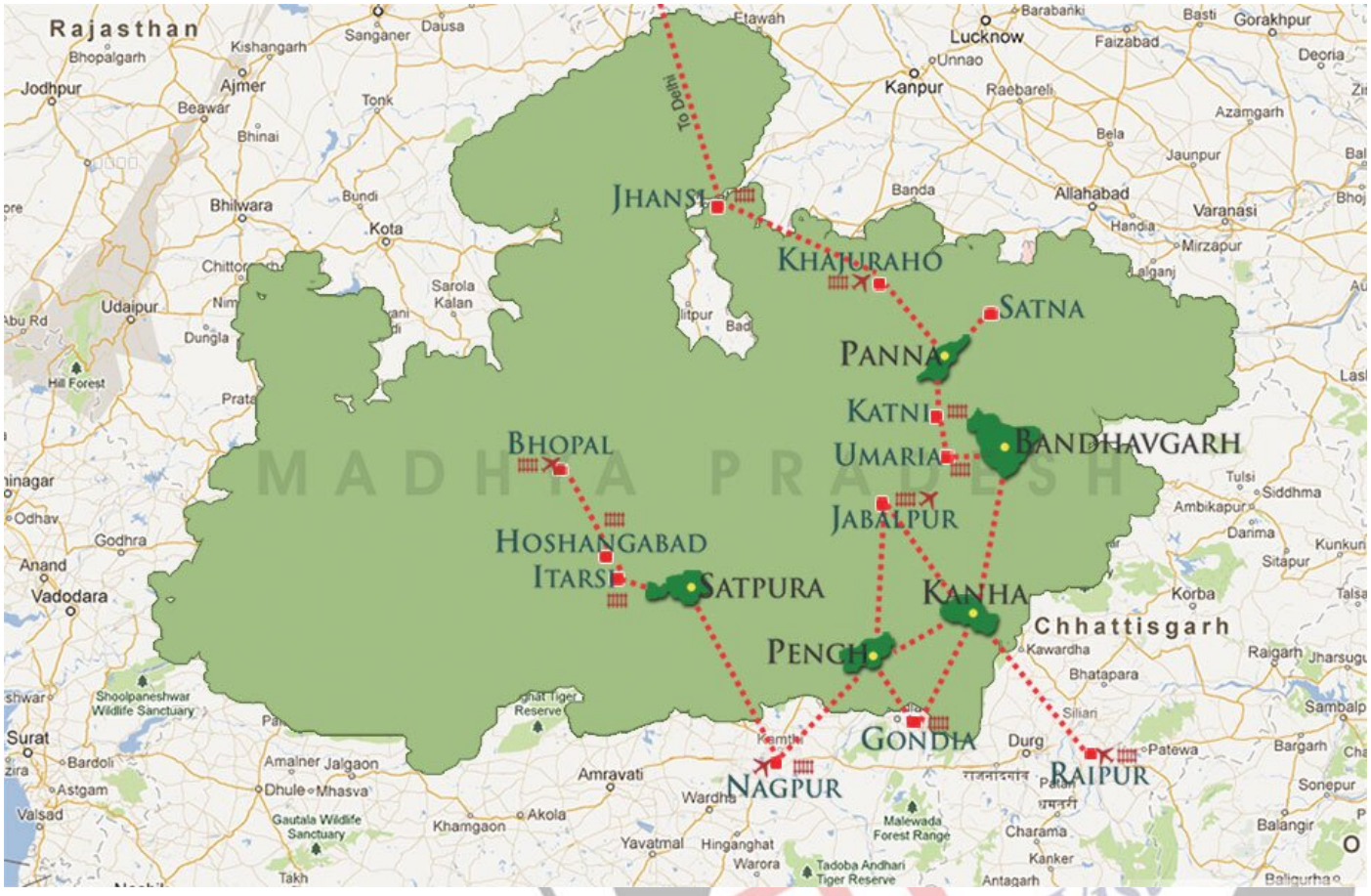

//

- **परिचय:** वर्ष 1968 में इसे राष्ट्रीय उद्यान के रूप में अधिसूचित किया गया तथा **वर्ष 1993 में** पड़ोसी पनपथा अभयारण्य में **प्रोजेक्ट टाइगर** नेटवर्क के तहत इसे **बाघ अभयारण्य घोषित** किया गया।
- **भौगोलिक पहलू:** यह **मध्य प्रदेश की सुदूर उत्तर-पूर्वी सीमा** और **सतपुड़ा पर्वत शृंखला के उत्तरी किनारे पर** स्थित है।
- **जलवायु:** उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु क्षेत्र।
- **जैवविविधता:** मुख्य भूमि में बाघों की संख्या बहुत अधिक है। यहाँ स्तनधारियों की 22 से अधिक प्रजातियाँ और पक्षियों की 250 से अधिक प्रजातियाँ हैं।
    - **उपस्थित प्रजातियाँ:** एशियाई सियार, बंगाल फॉक्स, स्लॉथ बियर, स्ट्राइप्ड हायना, तेंदुआ और बाघ, जंगली सूअर, नीलगाय, चिंकारा तथा गौर (एकमात्र शाकाहारी)।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/prehistoric-artifacts-found-in-madhya-pradesh